ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 279-282**

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- I, Issues-27, YEAR- Jan.-March-2023

ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की सृजनात्मकता एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

1. उमेश सिंह
2. डॉ0 रश्मि सिंह

1. शोध अध्येता, 2. असिस्टेंट प्रोफेसर– शिक्षण संस्थान, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी (उ0प्र0) भारत

Received-14.03.2023, Revised-21.03.2023, Accepted-27.03.2023 E-mail: hawasingh368@gmail.com

सारांशः ***भारत की पहचान, सदैव ज्ञान, परम्परा और एक ज्ञान संस्कृति के रूप में रही हैं और यह ज्ञान रूपी परम्परा विकसित होते समाज में गुरूकुल से विद्यालय में बदल गई। चूंकि विद्यालय समाज का लघु रूप है, अतः यहाँ पठन–पाठ्न की शैली विद्यमान रहती है और उसी प्रक्रिया में अध्ययन कर रहे अनेक शिक्षार्थी अपनी सृजनशीलता से नये–नये आयामों को विकसित करते रहते हैं। वैदिक युग से लेकर अब तक हमारे लिए शिक्षा का अभिप्राय यही रहा है कि वह प्रकाश का एक स्रोत है तथा यह जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में हमारा मार्गदर्शन करती है। शिक्षित समाज का प्रत्येक शिक्षार्थी शिक्षा के प्रत्येक क्षेत्र में शैक्षिक उपलब्धि को प्राप्त करता हैं। प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकर्ता द्वारा ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की सृजनात्मकता एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करने के लिए जनपद जालौन के माध्यमिक विद्यालयों में से 200 छात्र–छात्राओं का–चयन सरल यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया । आंकड़ों के संकलन हेतु डा० के0एन० शर्मा द्वारा निर्मित उपकरण (Divergent Production Abilities) का प्रयोग सृजनात्मकता हेतु व शैक्षिक उपलब्धि हेतु हाईस्कूल पास विद्यार्थियों के प्राप्तांकों को लिया गया। सांख्यिकीकरण के लिए मध्यमान, टी०–टेस्ट एवं मानक विचलन का प्रयोग किया गया, परिणामों के सूक्ष्म अवलोकन स्पष्ट होता है कि ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की सृजनात्मकता एवं शैक्षिक उपलब्धि में लगभग समानता पाई गई। जो कि परिस्थितिजन्य व वैयक्तिक विभिन्नतावश है। उचित सामाजिक परिवेश, विद्यालयी व्यवस्थाएं व अनुकूल व्यवहारों के परिणामस्वरूप शैक्षिक उपलब्धि के बढ़ने के साथ सृजनात्मकता में भी वृद्धि होती है।***

कुंजीभूत शब्द– सृजनात्मकता, शैक्षिक उपलब्धि, ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थी, सांख्यिकीकरण, परिस्थितिजन्य, संकलन।

प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन काल में अनेकों प्रकार का ज्ञान तथा कौशल प्राप्त करता है। विद्यालय की विभिन्न कक्षाओं में अनेक स्थानों से छात्र–छात्राएं शिक्षा ग्रहण करने के लिए आते हैं जहाँ बच्चे विद्यालयी शिक्षा का केन्द्र होते हैं। बच्चों में ज्ञान की समझ विकसित करने कक्षा कक्ष प्रबन्धन, प्रभावी छात्र – शिक्षक संवाद एवं पद निर्देशों की उत्तमता आदि का दृष्टिकोण विकसित करने का श्रेय विद्यालय को जाता है। विद्यालय रूपी शिक्षा ग्रहण कर ज्ञान तथा कौशल में कितनी दक्षता बालक ने प्राप्त की इसका पता उस ज्ञान तथा, कौशल के उपलब्धि परीक्षण से ही चलता है। चूंकि विद्यालय की विभिन्न कक्षाओं में अनेको प्रकार के विधार्थी शिक्षा का वास्तविक रूपी ज्ञान लेने के लिए आते हैं। और जहां उनके समान मानसिक योग्यता एक जैसी न होने के कारण वे समय की एक ही अवधि में विभिन्न विषयों तथा कुशलताओं में अन्तिम सीमा तक प्रगति की ओर अग्रसर रहते है। उनकी इसी प्रगति, प्राप्ति और उपलब्धि का मापन व मूल्यांकन उसकी शैक्षिक उपलब्धि का द्योतक होता है। बालक जैसे–जैसे उपलब्धियाँ अर्जित करता है उसकी सृजनात्मकता का विकास भी होता चला जाता है, क्योंकि सृजनात्मकता, मौलिकता तथा नवीनता के अद्भुत गुणों के विकास हेतु महत्वपूर्ण होती है। अतः इसका परिलक्षित होना आवश्यक है।

डा० ए०एस० अल्टेकर के शब्दों में, ''शिक्षा को प्रकाश व शक्ति का ऐसा स्रोत माना जाता है जो हमारी शारीरिक, मानसिक, भौतिक और आध्यात्मिक शक्तियों तथा क्षमताओं का निरन्तर व सामन्जस्यपूर्ण विकास करके, हमारे स्वभाव को परिवर्तित करती है और उसे उत्कृष्ठ बनाती है।''

अध्ययन की आवश्यकता– आधुनिक समाज में मानव को एक बुद्धिमान एवं विवेकशील प्राणी की संज्ञा दी गई है जबकि मनुष्य जन्म से न ही सामाजिक प्राणी है और न ही असमाजिक प्राणी। मनुष्य समाज के साथ अन्तःक्रिया करके व सामाजिक रीति रिवाजों का अनुसरण करके सामाजिक प्राणी बनता है। मानव का अधिकांश व्यवहार परिवार, समाज, सम्प्रदाय के रीति–रिवाजों एवं विद्यालयी वातावरण द्वारा प्रभावित होता है।

शोध अध्ययन का शैक्षिक, मनोवैज्ञानिक, एवं सामाजिक दृष्टि से विशेष महत्व है क्योंकि वर्तमान दृष्टिकोण से बालक समाज की वह कड़ी है जो विद्यालय रूपी नौका पर सवार होकर अपना और अपने देश के विकास का भविष्य तय करता है। प्रस्तुत अध्ययन की आवश्यकता यह दर्शाती है कि वर्तमान समय में विद्यार्थी के, शैक्षिक उपलब्धि का प्रभाव बालक पर क्या और किस रूप में पड़ता है। विभिन्न अध्ययन जैसे– पूनम बाला (1998), रेखा विश्नोई (2004), डा० सिन्हा एवं सरफराज (2008) आदि के अध्ययनों में खुले और बन्द प्रकार के विद्यालयी वातावरण में छात्र एवं छात्राओं के मध्य सृजनात्मकता में औसत अन्तर पाया गया। इसी प्रकार डिम्पल बर्मा (2016) ने किशोर विद्यार्थियों में बुद्धि एवं सृजनात्मकता चिंतन के मध्य सम्बन्ध का

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- I, Issues-27, YEAR- Jan.-March-2023

अध्ययन किया और पाया कि सृजनात्मकता और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सम्बन्ध है। रश्मि शर्मा (2017) ने अपने अध्ययन में पाया कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर सामाजिक आर्थिक स्तर आत्म प्रत्यय और व्यक्तित्व पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है। उपर्युक्त अध्ययनों के आधार पर शोधार्थी द्वारा यह देखा गया कि सृजनात्मकता और शैक्षिक उपलब्धि के सम्बन्ध में अध्ययन कम पाये गये अतः शोधार्थी ने इस समस्या को शोध हेतु चुना।

समस्या कथन – "ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की सृजनात्मकता एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन।"

अध्ययन के उद्देश्य –

1. ग्रामीण विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. ग्रामीण विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. शहरी विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्यपन की परिकल्पनाएं –

1. ग्रामीण छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
2. ग्रामीण छात्र एवं छात्राओं की सृजनात्मकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
3. शहरी छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता
4. शहरी छात्र एवं छात्राओं की सृजनात्मकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

अध्ययन का सीमांकन– प्रस्तुत शोध अध्ययन में केवल माध्यमिक शिक्षा परिषद प्रयागराज से सम्वद्ध माध्यमिक स्तर के 200 विद्यार्थियों को लिया गया है। अध्ययन के क्षेत्र हेतु केवल जनपद ललितपुर के विद्यार्थियों का चयन किया गया है। उपकरण – प्रस्तुत अध्ययन के चर सृजनात्मकता हेतु डॉ0 के0एन0 शर्मा द्वारा निर्मित मानकीकृत उपकरण का प्रयोग किया गया एवं दूसरे चर शैक्षिक उपलब्धि हेतु कक्षा 10 पास विद्यार्थियों के प्राप्तांकों की सूची का प्रयोग किया गया।

अनुसंधान प्रविधि– प्रस्तुत शोध अध्ययन में वर्णनात्मक (सर्वेक्षण) विधि का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु जनपद ललितपुरके माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत 200 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया। मध्यमान, मानक विचलन, टी–परीक्षण एवं क्रान्तिक अनुपात परीक्षण के द्वारा आंकड़ों का विश्लेषण किया गया तथा प्राप्त परिणामों के आधार पर निम्न निष्कर्ष निकाले गये।

आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या–

तालिका संख्या 01

1. ग्रामीण छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–परीक्षण–

क्र0सं0	प्रतिदर्श	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	मध्यमानों का अन्तर (D)	मानक त्रुटि (SE_D)	क्रान्तिक अनुपात (CR)	सार्थकता स्तर (.05)
1	ग्रामीण छात्र	50	442.1	37.89	36.2	7.55	4.79	1.98 सार्थक है
2	ग्रामीण छात्राएं	50	478.3	37.63				

व्याख्या– परिगणित टी–परीक्षण का मान 4.79 प्राप्त हुआ जो कि मुक्तांश 98 पर दिये गये मानकीकृत मान 1.98 से अधिक है। परिणामतः शून्य परिकल्पना अस्वी.त और शोध परिकल्पना स्वीकृत होती है।

तालिका संख्या 02

2. ग्रामीण छात्र एवं छात्राओं की सृजनात्मकता का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–परीक्षण –

क्र0सं0	प्रतिदर्श	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	मध्यमानों का अन्तर (D)	मानक त्रुटि (SE_D)	क्रान्तिक अनुपात (CR)	सार्थकता स्तर (.05)
1	ग्रामीण छात्र	50	77.8	16.02	−5.9	3.39	1.74	1.98 सार्थक नहीं है
2	ग्रामीण छात्राएं	50	83.7	17.91				

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- I, Issues-27, YEAR- Jan.-March-2023

व्याख्या– परिगणित टी–परीक्षण का मान 1.74 प्राप्त हुआ जो कि मुक्तांश 98 पर दिये गये मानकीकृत मान 1.98 से कम है। परिणामतः शून्य परिकल्पना स्वी.त और शोध परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

तालिका संख्या 03

3. शहरी छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–परीक्षण –

क्र0सं0	प्रतिदर्श	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	मध्यमानों का अन्तर (D)	मानक त्रुटि (SE_D)	क्रान्तिक अनुपात (CR)	सार्थकता स्तर (.05)
1	शहरी छात्र	50	456.72	39.32	6.96	7.91	0.87	1.98 सार्थक नहीं है
2	शहरी छात्राएं	50	463.68	39.87				

व्याख्या– परिगणित टी–परीक्षण का मान 0.87 प्राप्त हुआ जो कि मुक्तांश 98 पर दिये गये मानकीकृत मान 1.98 से कम है। परिणामतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत और शोध परिकल्पना स्वीकृत होती है।

तालिका संख्या 04

4. शहरी छात्र एवं छात्राओं की सृजनात्मकता का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–परीक्षण –

क्र0सं0	प्रतिदर्श	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	मध्यमानों का अन्तर (D)	मानक त्रुटि (SE_D)	क्रान्तिक अनुपात (CR)	सार्थकता स्तर (.05)
1	शहरी छात्र	50	85.42	15.37	–1.68	3.31	0.51	1.98 सार्थक नहीं है
2	शहरी छात्राएं	50	87.1	17.69				

व्याख्या– परिगणित टी–परीक्षण का मान 0.51 प्राप्त हुआ जो कि मुक्तांश 98 पर दिये गये मानकी.त मान 1.98 से कम है। परिणामतः शून्य परिकल्पना स्वी.त और शोध परिकल्पना अस्वी.त होती है।

शोध निष्कर्ष–

उद्देश्य संख्या–1– ग्रामीण विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना–1– ग्रामीण छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

परिणाम– परिकल्पना परीक्षण से स्पष्ट है कि ग्रामीण छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में विभेद है जो कि अंशमान का विभेद है। यह परिस्थितिजन्य व वैयक्तिक विभिन्नतावश है। छात्र/छात्राओं को समान शैक्षिक पर्यावरण व पोषण प्राप्त होने के कारण समानता पायी गयी है।

उद्देश्य संख्या–2– ग्रामीण विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना–2– ग्रामीण छात्र एवं छात्राओं की सृजनात्मकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

परिणाम– परिकल्पना परीक्षण से स्पष्ट है कि ग्रामीण छात्र एवं छात्राओं की सृजनात्मकता में लगभग समानता है जो कि परिस्थितिजन्य व वैयक्तिक भिन्नतावश है। छात्र/छात्राओं में यह समानता उचित विद्यालयी वातावरण व कुशल अध्ययन अध्यापन है जिस कारण दोनों में लगभग समानता पाई गयी।

उद्देश्य संख्या–3– शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना–3– शहरी छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

परिणाम– परिकल्पना परीक्षण से स्पष्ट है कि शहरी छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में लगभग समानता है जो कि यह समानता वैयक्तिक भिन्नतावश है। समानता के कारण दोनों के मध्य सजगता एवं विकास समानान्तर हो रहा है व सुविधाएं, साधन सर्वसुलभ है, जिस कारण दोनों में लगभग समानता पाई गई।

उद्देश्य संख्या–4– शहरी विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना–4– शहरी छात्र एवं छात्राओं की सृजनात्मकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

परिणाम– परिकल्पना परीक्षण से स्पष्ट है कि शहरी छात्र एवं छात्राओं की सृजनात्मकता में लगभग समानता है।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- I, Issues-27, YEAR- Jan.-March-2023

यह समानता पारिवारिक लगाव व प्रभाव एवं माहौल के कारण स्थिर है। अर्थात जहां विद्यालयी कार्य व्यवहार अनुकूल एवं सकारात्म।

निष्कर्ष एवं सुझाव– एक शैक्षिक अनुसंधानकर्ता के प्रमुख दायित्व के रूप में तार्किक चिन्तन के आधार पर परीक्षण योग्य परिकल्पनाओं के निर्माण में समर्थ होना है। शोधार्थी प्रदत्तों का कुशलतापूर्ण विश्लेषण करने हेतु सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग करता है जो विश्लेषण की प्रक्रिया का आधार बिन्दु होती है। अध्ययन के निष्कर्ष में कहा जा सकता है कि ग्रामीण व शहरी स्तर के छात्र/छात्राओं में उनकी शैक्षिक उपलब्धि और सृजनात्मकता के सम्बन्ध में सार्थक अन्तर नहीं है अर्थात् दोनों में शैक्षिक उपलब्धि व सृजनात्मकता के किसी एक चर के बढ़ने से दूसरा स्वतः बढ़ता है। बालक के शैक्षिक पर्यावरण व पोषण उत्तम होने से समानता का स्तर बराबर हो जाता है।

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन केवल 200 विद्यार्थियों पर है इसे और भी बड़े प्रतिदर्श पर किया जा सकता हैं।
2. इस शोध अध्ययन में केवल ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों को लिया गया हैं। इसमें अभिभावकों, शिक्षकों व प्रशिक्षण कर्ताओं को भी सम्मिलित किया जा सकता है।
3. इस प्रकार के शोध अध्ययन में शैक्षिक उपलब्धि एवं सृजनात्मकता के अतिरिक्त अन्य दूसरे चरों को भी लिया जा सकता है।

अध्ययन की शैक्षिक उपयोगता– प्रस्तुत शोध पत्र विद्यार्थियों, अभिभावकों, शिक्षकों, परामर्शदाताओं, शैक्षिक प्रशासकों व शैक्षिक नीति निर्धारकों के लिये आवश्यक एवं विशेष रूप से उपयोगी होगा। इस अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष से विद्यार्थी यह जान सकेगें कि सृजनात्मकता को और प्रभावी एवं उपयोगी बनाने हेतु शैक्षिक उपलब्धि कितनी और कहाँ तक प्रभावित कर सकती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ0 सुभाष (2021), विद्यालयी शिक्षा और साक्षरता, भारत सरकार मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नई दिल्ली, पेज नं0 1–3.
2. डॉ0 शर्मा, नमिता एवं डॉ0 पाराशर, मधु (2021), शिक्षा का वैचारिक ढांचा, एस0बी0 पी0डी0 पब्लिकेशन, आगरा, पेज नं0 03.
3. डॉ0 गुप्ता, एस0पी0 एवं डॉ0 गुप्ता, अल्का (2013), व्यवहारपरक विज्ञानों में सांख्यिकीय विधियां, शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद, पेज नं0 111–112.
4. शाह0, एम0ए0 एवं माथुर, कुसुम (2013), मनौवैज्ञानिक परीक्षण आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर पृष्ठ सं0 274.
5. सारस्वत, मालती (2006), शिक्षा मनोविज्ञान की रूपरेखा लखनऊ, आलोक प्रकाशन,पृष्ठ सं0–26.
6. अहमद, डॉ0 सरफराज एवं सिन्हा (2008), किशोरों के शैक्षिक निष्पत्ति पर के अनुकूल एवं प्रतिकूल वातावरण के प्रभाव का अध्ययन, भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, Vol.-27(2), Page-7-13.
7. वर्मा, डिम्पल (2016), किशोर विद्यार्थियों के बुद्धि एवं सृजनात्मकता चिंतन के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन Emarging Research Journol Vol - 1, Issue & 2, Page-7-9.
8. विश्नाई, रेखा (2004), इफेक्ट ऑफ स्कूल इनवायरमेन्ट ऑन क्रियेटीविटी एण्ड ऐकेडमिक एचीवमेन्ट ऑफ शेडइयूल एण्ड नॉन सेड्यूल कास्ट स्टूडेन्टस, P.hd (शिक्षाशास्त्र), डॉ0 भीमराव अम्बेडकर वि0वि0 आगरा, पेज नं0–140–152.
9. शर्मा, रश्मि (2017), माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर बुद्धि, सामाजिक आर्थिक स्तर, संकल्पना व व्यक्तित्व के प्रभाव का अध्ययन, P.hd (शिक्षाशास्त्र), श्री जगदीश प्रसाद झाभरमल टिकड़ेवाल, वि0वि0 (राजस्थान)।
10. www.eric.ed.gov.
11. www.Google.co.in
12. www.enwikipedia.org/wiki.

*****